विचार बिन्दु

हम यहाँ किसी विशेष कारण से हैं। इसीलिए अपने भूत का कैदी बनना छोड़िये। अपने भविष्य के निर्माता बनिए। –रोबिन शर्मा

हादसे-दर-हादसे, कब रुकेगा यह सिलसिला?

देश में प्रतिदिन कहीं न कहीं से किसी हादसे की खबर सुनने को मिलती रहती है। ये हादसे चाहे वह बस की दुर्घटना के हों, रेल दुर्घटना के हों, भगदड़ मचने से हो, पुल टूट जाने से हो, किसी भवन में आग लग जाने के कारण हों अथवा सीवर टंकी में डूब जाने के कारण हो। प्रत्येक हादसे में इन्सान अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। प्रत्येक हादसे के बाद सरकार उसकी जांच कराने की घोषणा करती है एवं जनता को आश्वासन देती है कि इस प्रकार के हाथ से भविष्य में नहीं होंगे। यह संदिग्ध है कि क्या इन हादसों से कोई सीखता है अथवा नहीं? यदि किसी ने भी इन हादसों से किसी प्रकार की कोई सीख ली होती तो, इतनी नियमितता के साथ इतने हादसे नहीं होते।

इस लेख में हम, इन हादसों में से कुछ के कारणों का विश्लेषण करने एवं कम करने के कुछ उपाय पर विचार करेंगे।

मिग-21 वायुयान एयरपोर्ट के उड़न दस्ते का भाग है। हर दो-तीन महीने में हम इस हवाई जहाज के दुर्घटनाग्रस्त होने की खबर पढ़ते हैं। इनमें से कई बार हम अपने जांबाज पायलटों को खो भी देते हैं। इसके उपरांत भी किसी ने यह नहीं सोचा कि इस प्रकार के हवाई जहाज को भारत भारतीय वायुसेना के बेड़े से हटा दिया जाए। पायलट की जान की कोई कीमत शायद भारत सरकार के लिए नहीं है। इसका कोई वैकल्पिक तरीका भी हो सकता है, लेकिन उसे खोजने का प्रयास तब होगा जब किसी दुर्घटनाग्रस्त मिग-21 का पायलट किसी बड़े नेता का कोई रिश्तेदार होगा। भगदड़ से होने वाले हादसों की बात करें तो तो हमारे सामने कुछ समय पूर्व जोधपुर के मेहरानगढ़ में भगदड़ से मरने वालों का दृश्य सामने आ जाता है। इसी प्रकार गुजरात में कुछ साल पहले दर्शनार्थियों में भगदड़ मचने से कई लोग मारे गए थे। हाल ही में मथुरा में वृंदावन में दर्शन करते समय भगदड़ मचने से कुछ मौतें हुईं।

भगदड़ में लोग तब ही मरते हैं जब आवश्यकता से कहीं अधिक लोग एक स्थान पर एकत्रित हो जाते हैं और निकलने का रास्ता बंद हो जाए। प्रशासन को जब यह पता होता है कि किसी भी स्थान की क्षमता निश्चित है तो उस पर आने का मार्ग पर बहुत पहले ही क्यों नहीं बंद कर दिया जाता। यात्रियों को बड़ी बेकाबू भीड़ में परिवर्तित होने से को रोका जा सकता यदि प्रशासन समय रहते आवश्यक कार्यवाही कर ले।

हाल ही में, मोरबी के पुल टूटने से 100 से अधिक व्यक्ति मारे गए। इस पुल को मरम्मत के बाद 7 माह पूर्व ही खोला गया था। आज इतने तकनीकि विकास के विकास होने के पश्चात यह पता करना कतई मुश्किल नहीं है कि किसी पुल पर भार वहन करने की क्षमता कितनी है? इससे अधिक किसी भी प्रकार से किसी भी व्यक्ति को जाने की अनुमति नहीं होनी चाहिए। यदि इस छोटी सी बात का ध्यान रख लिया जाता तो सम्भवतया मोरबी की दुर्घटना को टाला जा सकता था। नियमों का पालन करने में हमारा देश बहुत ही पीछे है। हाल ही में, हमें दक्षिण अफ्रीका की यात्रा के दौरान, केपटाउन एक पर्यटन स्थल, टेबल माउंटेन पर रोपवे से जाना था, किंतु दो बार प्रयास करने पर भी हम असफल रहे, क्योंकि केबल कार को वायु की हवा की गति अधिक के कारण बंद कर दिया गया था। हवा की गति जब अधिक होती है तो केबल कार के पत्थरों से टकराने की संभावना होती है। इसी कारण दुर्घटनाग्रस्त होने की आशंका बनी रहती है। प्रशासन ने इस नियम को कड़ाई से लागू किया और इस बात की अधिक चिंता नहीं कि कुछ लोग टेबल माउंटेन को नहीं देख पाएंगे। मैं विचार कर रहा था कि यदि भारत में ऐसी स्थिति होती तो किसी बड़े नेता या प्रभावशाली व्यक्ति के कहने पर उसे प्रारंभ कर दिया जाता। यह संभव है कि कई बार ऐसा करने पर दुर्घटना न भी हो, किंतु जब दुर्घटना हो जाए तो फिर उसमें मरने वालों का जिम्मेदार कौन होता? बसों के हादसों की संख्या तो इतनी अधिक है इसकी चर्चा करना भी व्यर्थ लगता है। बसों के हादसों का एक प्रमुख कारण वाहन चालकों का लंबे समय तक लगातार काम करते रहना है, न उन्हें पूर्ण विश्राम मिलता है ना उन्हें साप्ताहिक अवकाश। दक्षिण अफ्रीका में हमने देखा कि कोई भी ड्राइवर बस को लगातार 2 घंटे से अधिक नहीं चला सकता एवं उसके पश्चात उसे अनिवार्य रूप से विश्राम करना ही होता है। कहीं कोई देखने वाला नहीं था, तब भी इस नियम की सदैव पालना होते हुए हमने देखा। इसके विपरीत भारत में कई बार एक ही ड्राइवर पूरी रात वीडियो कोच चलाते हैं। ड्राइवर द्वारा लगातार 10-12 घंटे तक बस चलाने के कारण अधिकांश हादसे हुए, जिनमें अनेक लोगों की मौत हुई। बस के फिटनेस सर्टिफिकेट की जांच नहीं की जाती है। यह नहीं देखा जाता कि इसका समय पर नवीनीकरण कराया जाता है या नहीं? कई बार यह देखा गया कि हादसे की जांच में यह सामने आया कि बिना प्रमाण पत्र के बस पहाड़ी मार्ग पर चल रही होती है।

> **जब एक बार हादसे के कारणों के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों को, चाहे वह कितने ऊंचे पद पर क्यों ना हो, दंडित होते हुए लोग देखेंगे तो अगली बार में शॉर्टकट ढूंढने के बजाय, जनता की सुरक्षा के हित में पर्याप्त व्यवस्थाएं सुनिश्चित करेंगे। नागरिकों को भी कुछ कम टिकट में यात्रा करने के लालच को छोड़ना होगा।**

हादसों के दो कारण हो सकते हैं, एक तो विशुद्ध रूप से प्राकृतिक और दूसरा मानव निर्मित। सभी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के बावजूद हादसे हो जाएं या प्रकृति के प्रकोप के कारण हादसे हो जायें, उन्हें कई बार टालना मनुष्य के लिए संभव नहीं होता। जो हादसे प्रशासन की लापरवाही अथवा लोभ के कारण हो, उन पर तो निश्चित रूप से नियंत्रण किया ही जा सकता है। जिससे हजारों लोग अपनी जान गवाने से बच सकें। हादसों की जांच रिपोर्ट को सार्वजनिक नहीं किया जाता एवं उनके लिए दोषी व्यक्तियों को समय पर पर्याप्त दंड नहीं मिलता है। उदाहरण के लिए मेहरानगढ़ जोधपुर किले में हुए हादसे में लगभग 300 व्यक्तियों की जान गई। उसके लिए न्यायिक आयोग भी बनाया गया। उस न्यायिक आयोग ने अपनी रिपोर्ट भी सरकार को दे दी, किंतु उसे सार्वजनिक कई सालों बाद भी नहीं किया गया। इसे यदि सार्वजनिक किया गया होता, तो इसके कारणों का पता सबको लगता एवं उसके आधार पर भविष्य में इस प्रकार की दुर्घटनाओं को रोकने के लिए समुचित प्रयास करना सुनिश्चित हो पाता। पता नहीं सरकार की क्या मजबूरी है जो इस प्रकार के हादसों की रिपोर्ट को सार्वजनिक नहीं करती। इससे कुछ प्रभावशाली लोगों को बचा भले ही लिया जाए, किंतु इससे खामियाजा तो साधारण जनता को ही भुगतना पड़ता है ।

बिजली के तारों से बसों में कई बार करंट के कारण अनेक लोगों ने अपनी जान गंवाई है। इसका एक प्रमुख कारण, विद्युत प्रवाहित होने वाले बिजली के तारों का झूल कर लटकना है, जो बस के संपर्क में आने से बस के साथ ही सभी यात्री भी जल जाते हैं। ऐसे हादसे लगातार होने के बावजूद अब भी स्थिति जस की तस है। ना तो ढीले तारों को ठीक किया गया है, न इन तार में विद्युत प्रवाह को तत्काल प्रभाव से बंद किया जाता है। क्या आज के वैज्ञानिक युग में ऐसा कोई तरीका नहीं निकल सकता, जिससे इस प्रकार के विद्युत तारों के कारण होने वाले हादसों को रोका जा सके?

विभिन्न प्रकार के हादसों के लिए जहां प्रमुख रूप सरकार जिम्मेदार है, वहीं नागरिक भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। विभिन्न प्रकार के नियमों के अंतर्गत जो आवश्यक प्रमाण पत्र लेना रोपवे चलाने वाली कंपनी अथवा अन्य प्रकार के किसी उपक्रम के लिए आवश्यक है, उनका शॉर्टकट ढूंढने की भारतीय प्रवृत्ति के कारण इस प्रकार के हादसे और अधिक होते रहे हैं। क्यों नहीं कोई बस का मालिक अपनी बस का समय पर फिटनेस प्रमाण पत्र ले? क्यों नहीं रोप-वे संचालित वाली कंपनी उन सभी सुरक्षा व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करती हैं, जो इसी प्रकार के हादसे को जन्म दे सकते हैं?

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि हादसों को रोकने के लिए जहां बड़े कठोर कानून एवं नियमों की आवश्यकता है, वहीं यह भी आवश्यकता है कि इन नियमों का पालन करने में जनता भी अपना कर्तव्य निभाएं। जो उपक्रम इन नियमों का पालन करने से स्वयं को बचा लेते हैं और फिर भी किसी भी प्रकार की सजा नहीं पाते हैं, वही अन्य लोगों को भी इस प्रकार का कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। इसके परिणामस्वरूप हादसों का सिलसिला निरंतर चलता रहता है। यदि इसे तोड़ना है, तो नागरिकों को भी सुनिश्चित करना होगा कि किसी भी व्यवस्था को सुचारू रूप में चलाने हेतु अपनी ओर से समुचित नियमों का पालन करें। व्यावसायियों को भी अपने स्वार्थ को लोगों की जान बचाने हेतु छोड़ना होगा। राजनीतिक संरक्षण समाप्त करना होगा। हादसे की जांच रिपोर्ट को के कारणों को सार्वजनिक करना आवश्यक है एवं यदि किसी भी व्यक्ति एवं विभाग द्वारा इस प्रकार का कार्य किया गया हो, जिससे हादसे हुए हैं, तो उसके लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी तय करके उसे कठोरतम दंड देने की व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी। जब एक बार हादसे के कारणों के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों को, चाहे वह कितने ऊंचे पद पर क्यों ना हो, दंडित होते हुए लोग देखेंगे तो अगली बार में शॉर्टकट ढूंढने के बजाय, जनता की सुरक्षा के हित में पर्याप्त व्यवस्थाएं सुनिश्चित करेंगे। नागरिकों को भी कुछ कम टिकट में यात्रा करने के लालच को छोड़ना होगा। वाहन की क्षमता से अधिक उसमें नहीं बैठ कर अगले वाहन की प्रतीक्षा करनी होगी। इसी प्रकार जहां अत्यधिक भीड़भाड़ होने की संभावना हो, वहां समुचित सावधानी बरतनी होगी। क्या यह संभव नहीं है कि प्रत्येक स्थल की व्यक्तियों एवं वाहनों की कुल क्षमता का प्रदर्शन सार्वजनिक कर दिया जाए ताकि कोई भी व्यक्ति अपने आपको दण्डित होने जाने से बचा न पाए। भारत में विभिन्न त्योहारों के अवसर कुछ स्थलों पर अत्यंत भीड़ होने की आशंका बनी रहती है। इसे समुचित स्थान पर नियंत्रित करना शासन-प्रशासन के लिए कठिन नहीं है। आवश्यकता केवल संवेदनशीलता की है। शासन की संवादहीनता तो इस हद तक मर चुकी है कि बड़े हादसे में सैंकड़ों व्यक्तियों के मरने के तत्काल बाद उसके प्रतिनिधि उत्सव मनाने में जुट जाते हैं।

एक और प्रवृत्ति हमारे देश में देखी जाती है, वह है, विडंबना है कि नियमों का पालन करने और कराने वालों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। सरकार के नेता एवं उच्च अधिकारी भी ऐसे लोगों को पसंद नहीं करते जो सभी लोगों से समान रूप से नियमों की पालन कराने हेतु सख्ती करें। नियमों की पालना कराने वालों को संरक्षण और प्रोत्साहन मिलेगा, तो नियमों की पालना करने की प्रवृत्ति में वृद्धि होगी, साथ ही नियमों को तोड़ने वालों एवं उन्हें संरक्षण देने लोगों को लाभ पहुंचाने वाली प्रवृत्ति पर अंकुश लगेगा।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

हिन्दू-मुस्लिम एकता के मसीहा गुरूनानक का जीवन और दर्शन

यादरामसिंह यादव

महान सन्त गुरूनानक का जन्म 15वीं सदी में सन् 1469 ई. में हुआ था। उस समय मुसलिम शासनकाल में धर्म के नाम पर कट्टरता का वातावरण था, तब उन्होंने ऐसे मानवतावाद को जन्म दिया जिसमें जाति संस्कार रीति-रिवाजों के प्रति आक्रोश की भावना पैदा होती है।

कवि होने के कारण उन्होंने अपनी रचनाओं में दार्शनिक तत्वों का समावेश कर, सिक्ख धम की स्थापना की। गुरूनानक में पैगम्बर, दार्शनिक, भगवत भक्त, ब्रह्मज्ञानी, गृहस्थ त्यागी, समाज सुधारक, कवि, देशभक्त, दीनदुखियों के रक्षक विश्वबन्धु व मानवप्रेमी के गुण विद्यमान थे। गुरूनानक के समय समाज में मुसलमान शासकों का लूट एवं आक्रमणकारी रवैया था, तो हिन्दुओं ने अपने को वर्गों, जातियों और सम्प्रदायों में बांट रखा था। उनके समय में हिन्दु तथा इस्लाम ये दोनों धर्म भ्रष्ट एवं पतित हो चुके थे और हिन्दू धर्म की आत्मा मर चुकी थी। राजनैतिक व्यवस्था तो और भी खराब थी।

जिसका वर्णन स्वयं नानकदेव ने इस प्रकार किया है कि:- ''कलि काले राजे का सांई, धरमु पंखु करि उडरिया'' अर्थात् यह काल तलवार सा है। शासक व राजे-कसाईयों के समान हैं, अच्छाई पंख लगाकर उड़ चुकी है।

उनका सूत्र वाक्य था 'ना कोई हिन्दू है और ना कोई मुसलमान' अर्थात सभी मानव मात्र हैं। गुरूनानक देव दोनों वर्गों में एकता के लिए झंडा लेकर ''आसाम से मक्का और वाराणसी से सिंहल तक की यात्रा की थी। नानक ने कहा कि:- 'ईश्वर एक है, जो सब पैगम्बरों व अवतारों से ऊँचा है।' उन्होंने अपना सारा जीवन हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए लगा दिया। नानक जी जब मक्का में हाजी बनकर गये तो अनेक बड़ी हस्तियों से उनकी धर्म चर्चा हुयी। भाई गुरूदास ने इसका वर्णन करते हुए लिखा है कि 'यह बताओ कि कौन बड़ा है? हिन्दू या मुसलमान?' नानक ने जवाब दिया कि– 'नेक अमल के बगैर न हिन्दू, हिन्दू है और ना मुसलमान, मुसलमान।'

नानकदेव कहते थे कि–'मनुष्य में स्थित आत्मा में ईश्वर की ज्योति को पहचानो। ईश्वर के सानिध्य में कोई जाति नहीं होती। ''जाणह ज्योति न पूंछहू जाति अगै जाति न है।''

गुरूनानक ने कहा–'मैं सब मनुष्यों को उत्तम मानता हूँ, किन्तु किसी को अक्षम नहीं। समूची सृष्टि में एक ही ज्योति व्याप्त है, अत: जन्मत जाति व्यर्थ है। गुरूनानक ने लंगर प्रथा का प्रारम्भ कर सभी जाति व धर्मों वालों को एकता से सूत्र में पिरोने का महति कार्य किया। मध्यकाल में नारी समाज में बड़ी तिरस्कृत व हेय दृष्टि से देखी जाती थी। गुरूनानक ने सदियों से उपेक्षित एवं अबला समझी जाने वाली नारी को उसके खोये हुए अधिकारों को वापिस दिलाया। सिद्धों, जोगियों, नाथों एवं कई सन्तों ने स्त्री को माया व भगवत प्राप्ति में बाधक बताया। जो राजाओं, सन्तों व राजयोगियों की जन्मदायी है। गुरूनानक ने कहा कि जिस नारी ने हमें जन्म दिया, बड़े-बड़े पीर, महात्मा पैदा किये, उसे नीच, बुरा कहना क्या ठीक है।

नानक कहते थे कि जैसा तुम दूसरों को देखना चाहते हो वैसे पहले तुम स्वयं बनो तब तुम्हे सर्वत्र अपना ही रूप दिखाई देगा। गुरूवाणी में लिखा है:- ''मन अपने से बुरा मिटाना, देखे सकल सृष्ट साजना।'' यदि मानव अपने मन से बुरी भावना हटा देगा, तब वह दूसरे के दुख दर्द को अपना दर्द समझता है वही सच्चा मानव है। इस प्रकार गुरूनानक देव ने एक ईश्वरीय शक्ति दार्शनिक सिद्धान्त पर जाति विहीन सिक्ख धर्म की स्थापना की। वर्तमान युग में ऐसे महान सन्त के विचार एवं दर्शन को अपनाने की अत्यन्त आवश्यकता है।

यादरामसिंह यादव,
स्वतंत्र लेखक एवं साहित्यकार

प्रदेश के छह बस डिपो होंगे हाइटेक

- **झुंझुनूं समेत छह बस डिपो हाइटेक सुविधाओं के साथ तैयार होंगे**

झुंझुनूं, (निसं)। राजस्थान रोडवेज बस डिपो अब हाइटेक सुविधाओं के साथ यात्रियों के लिए तैयार होंगे। इसको लेकर निगम ने तैयारियां शुरू कर दी है। शुरुआती चरण में प्रदेश के 6 डिपो को हाइटेक रूप से विकसित किया जाएगा। इसको लेकर करीब 35 करोड़ रुपए की वित्तीय स्वीकृति जारी की जा चुकी है।

प्रदेश में जयपुर, भरतपुर, अजमेर, उदयपुर व कोटा के साथ झुंझुनूं बस डिपो को हाइटेक रूप में विकसित किया जाएगा। इन बस डिपो पर आधुनिक सुविधाओं से युक्त प्रतीक्षालय के साथ प्लेटफॉर्म बस शेल्टर डिपो के नए भवन, सड़क तथा महिलाओं के लिए अलग से प्रतिक्षालय के साथ-साथ अत्याधुनिक सुलभ शौचालय का निर्माण करवाया जाएगा। गत दिनों रोडवेज प्रशासन की ओर से इन डिपो में डीपीआर बनाने को लेकर टीमों ने विजिट कर सुविधाओं के बारे में जानकारी लेते हुए डीपीआर तैयार की है। परिवहन मंत्री बृजेंद्र सिंह ओला ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश के छह बस डिपो को हाइटेक रूप में विकसित किया जाएगा। इन डिपो में अत्याधुनिक सुविधाएं होगी। साथ ही यात्रियों के लिए उच्च श्रेणी के प्रतीक्षालय बनाए जाएंगे। इन डिपो को अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त बनाने को लेकर 35 करोड़ की वित्तीय स्वीकृति जारी हुई है। टेंडर होने के बाद इन डिपो में काम शुरू होगा। डिपो के हाइटेक होने से यात्रियों का रुझान रोडवेज बसों की ओर बढ़ेगा। साथ ही रोडवेज की आमदनी में भी इजाफा होगा।

जैसलमेर में दिखा ''लार्ज कॉरमोरैंट''

जैसलमेर, (नि.सं.)। प्रवासी पक्षी लार्ज कोरमोरांट को पर्यावरण संरक्षक सुमेर सिंह भाटी ने देखा, जिसकी सूचना उन्होंने टीम ओरण सदस्य पर्यावरण प्रेमी पार्थ जगाणी को दी। जगाणी ने बताया कि लार्ज कॉरमोरैंट जिसे हिंदी में बड़ा पनकौआ कहते हैं।

- **लार्ज कॉरमोरैंट जिसे हिंदी में बड़ा पनकौआ कहते हैं**

सर्दियों में जैसलमेर के गड़ीसर तालाब में नजर आता है, परन्तु देगराय ओरण क्षेत्र में यह पहली बार देखा गया है। यह पक्षी समुद्री किनारों और यूरोप, एशिया व ऑस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड के अंदरूनी ताजे पानी की नदियों, झीलों व तालाबों में सामान्यत: पाया जाता है।

पक्षी बड़ा पनकौआ।

जाति व्यवस्था समाप्त करने के लिए लंगर व्यवस्था लागू की गुरु नानक देव ने

पन्नालाल मेघवाल

गुरु नानक देव ने बचपन से ही रूढ़िवादी सोच का विरोध किया था। एक बार उनके पिताजी ने 20 रुपए देकर बाजार भेजा और कहा कि खरा-सौदा लेकर आना। उन्होंने उन रुपयों से भूखे साधुओं को भोजन करा दिया। लौटकर उन्होंने पिताजी से कहा कि वह खरा-सौदा कर आए हैं।

जाति व्यवस्था से ऊंच-नीच एवं छोटे-बड़े का भाव रहता है। उन्होंने समाज से इस बुराई को समाप्त करने के लिए सर्वत्र लंगर व्यवस्था की शुरुआत की। गुरु नानक देव निर्गुण-उपासक एवं मूर्ति पूजा के खिलाफ थे। उनका कहना था कि ईश्वर एक है, वह सर्वशक्तिमान है, वही सत्य है। वे मानव धर्म के प्रबल समर्थक थे। गुरु नानक देव एक दार्शनिक, समाज सुधारक, गृहस्थ, योगी एवं देश भक्त थे।

गुरु नानक देव सिखों के प्रथम गुरु हैं। वे सिख धर्म के संस्थापक के साथ ही मानव धर्म के उत्थापक भी थे। वे संसार से त्याग एवं सन्यास के खिलाफ थे। उन्होंने सांसारिक जीवन जीते हुए सिख धर्म एवं मानव धर्म की सेवा एवं प्रचार-प्रसार किया। गुरु नानक देव का जन्म 15 अप्रैल 1469 को लाहौर से 65 किलोमीटर दूर स्थित तलवंडी नामक स्थान पर हुआ था। बाद में तलवंडी का नाम ननकाना साहब पड़ा जो पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में है। गुरु नानक देव के पिता का नाम कल्याणचंद मेहता (कालूजी), माता का नाम तृप्तादेवी, बहन का नाम नानकी, पत्नी का नाम सुलक्षिणी एवं पुत्रों का नाम श्रीचंद एवं लक्ष्मीदास था। गुरु नानक देव का देहावसान करतारपुरा में 1539 में हुआ। स्वर्गारोहण से पूर्व उन्होंने बाबा लहना को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। वे गुरु अंगददेव के नाम से प्रसिद्ध हुए।

गुरु नानक देव ने उपदेश दिया कि ईश्वर हम सबका पिता है। कोई बड़ा-छोटा नहीं है। कोई आम या खास नहीं है। उनका उपदेश है कि कभी भी किसी का हक नहीं छिनना चाहिए। मानव को मेहनत और ईमानदारी से अपना कार्य करना चाहिए। इस ईमानदारी की कमाई में से जरूरतमंदों को भी कुछ देना चाहिए। उनका मानना था कि महिला एवं पुरुष बराबर हैं। इसलिए महिलाओं का भी पुरुषों के समान सम्मान करना चाहिए। गुरु नानक देव का मानना था कि धन को जेब तक ही रखना चाहिए उसे ह्रदय में स्थान नहीं देना चाहिए।

उनका उपदेश था कि सदैव एक ही ईश्वर की आराधना करनी चाहिए। ईमानदारी और परिश्रम से ही पेट भरना चाहिए।हमें किसी को सताना नहीं चाहिए। सांसारिक बातों से इतना मोह नहीं करना चाहिए कि ईश्वर को याद करने का समय ही न हो। इस दृष्टि से गुरु नानक देव सिख धर्म के ही नहीं बल्कि संपूर्ण मानव धर्म के संस्थापक रहे हैं।

पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार

शौचालय एवं कचरे के ढेर के बीच चल रहा आंगनबाड़ी केंद्र

शौचालय एवं आंगनबाड़ी केंद्र के दरवाजे पर लगा गंदगी का ढेर।

- **विभागीय लापरवाही के चलते बालकों का जीवन संकट में**

चाकसू, (निसं)। राजस्थान सरकार, नगरपालिका चाकसू व भारत सरकार के तमाम स्वास्थ्य व स्वच्छता के दावों के बाद भी चाकसू नगरपालिका क्षेत्र के हालात भगवान भरोसे चल रहे हैं। यहां मुख्य बाजार स्थित सरकारी गोदामों के मध्य स्थित खाली जगह पर नगरपालिका ने सुलभ शौचालय बना डाला। इससे लगता ही विभाग ने आंगनबाड़ी केंद्र का भवन बना डाला। हालत यह है कि उसके बाद नगरपालिका सफाई कर्मचारियों ने शौचालय एवं आंगनबाड़ी केंद्र के ठीक सामने कचरा संग्रहण केन्द्र बना डाला। केन्द्र पर सेवा लेने वाले बच्चों व महिलाओं को रोजाना समस्या से दो-चार होना पड़ता है। आश्चर्यजनक बात यह भी है कि शौचालय के पास प्राचीन हनुमान मंदिर बना हुआ है, यहां सार्वजनिक प्याऊ चल रही है। हजारों लोगों का बाजार में आवागमन रहता है। वार्ड पार्षद विनोद कुमार राजोरिया, राधादेवी शर्मा, सलमा खान समाजसेवी शफीक खान सहित आस-पास के दुकानदार इन हालातों की तरफ प्रशासन का ध्यान भी आकर्षित कर चुके हैं, लिखित में शिकायतें हो चुकी हैं, लेकिन समाधान किसी स्तर से भी नहीं हो पा रहा है।

राशिफल मंगलवार 8 नवम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, भरणी नक्षत्र रात्रि 1:39 तक, व्यतिपात योग रात्रि 9:45 तक, बव करण सांय 4:32 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मिथुन, बुध-तुला, गुरू-मीन, शुक्र-तुला, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से सांय 4:32 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 1:39 से आरम्भ होगा। आज कार्तिक पूर्णिमा, सत्यव्रत, गुरू नानक जयन्ती, देव दिवाली है और कार्तिक स्नान और अष्टानिका महापव्र पूर्ण होगा। आज मन्वादि और भीष्म पंचक समाप्त होंगे। पदमक योग रात्रि 1:39 से आरम्भ होगा। आज खग्रास चन्द्रग्रहण सम्पूर्ण भारत में ग्रस्तोदय के रूप में दिखाई देगा। ग्रहण आरम्भ दिन 2:39 से होगा। ग्रहण मध्य 4:29 और समाप्ति 6:19 पर होगी। सूतक आज सूर्योदय से ग्रहण समाप्ति तक रहेगा। आज चन्द्रोदय 5:37 पर होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 9:01 तक, शुभ 10:43 से 12:26 तक, चर 3:50 से 5:33 तक, लाभ 5:33 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:45, सूर्यास्त 5:36

मेष

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है और अनबन होने का भय बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

कर्क

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

सिंह

व्यावसायिक प्रयासों में सार्थक/उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है।

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय बना रहेगा।

तुला

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

वृश्चिक

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

धनु

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में ऊचित सोच-विचार हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कारणों से भागदौड़ बनी रहेगी।